iJRASET
International Journal For Research in
Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 12 **Issue:** X **Month of publication:** October 2024

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2024.64465

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 12 Issue X Oct 2024- Available at www.ijraset.com

“गुप्तकालीन सामाजिक आयाम एक: संक्षिप्त अवलोकन”

नरेंद्र सिंह
सहायक आचार्य, इतिहास (गेस्ट फैकल्टी), राजकीय महाविद्यालय, मंगलाना

सारांश:** गुप्त काल (लगभग 320 से 550 ई) भारतीय इतिहास का एक ऐसा स्वर्णिम युग है, जिसने सांस्कृतिक धार्मिक और सामाजिक विकास के विभिन्न आयामों पर गहरा प्रभाव डाला। इस काल में न केवल राजनीतिक और सांस्कृतिक उत्कर्ष हुआ, बल्कि समाज में भी गहरे परिवर्तन आए। गुप्तकालीन समाज में सामाजिक व्यवस्था काफी हद तक वर्ण और जाति के आधार पर संगठित थी, और यह व्यवस्था धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से गहराई से प्रभावित थी। सामाजिक अनुशासन और नियमों का पालन अनिवार्य था, और यह व्यवस्था समाज में स्थिरता बनाए रखने में सहायक थी, हालांकि यह सामाजिक गतिशीलता को बाधित भी करती थी। इस शोध पत्र में गुप्तकालीन समाज के विभिन्न सामाजिक पहलुओं का विश्लेषण किया गया है जिसमें वर्ण व्यवस्था, स्त्रियों की स्थिति, शिक्षा, धर्म, कला और संस्कृति प्रमुख है। गुप्त काल में सामाजिक संरचना किस प्रकार विकसित हुई और इन परिवर्तनों का दीर्घकालिक प्रभाव क्या था यह शोध का मुख्य उद्देश्य है।

I. परिचय

गुप्त काल भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण चरण था जिसे भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस काल में न केवल राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि देखने को मिली, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र में भी गहरा प्रभाव पड़ा। सामाजिक संरचना में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए जिनका असर दीर्घकालिक रहा। गुप्त काल में वर्ण व्यवस्था अधिक सुदृढ़ हो गई। ब्राह्मणों का समाज में महत्वपूर्ण स्थान था और धार्मिक क्रियाकलापों में उनका वर्चस्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। समाज चार प्रमुख वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में विभाजित था, लेकिन जातियों का अधिक कठोर विभाजन भी इस काल में देखा गया। इस समय धर्म के साथ-साथ शिक्षा का महत्व बढ़ा और तक्षशिला नालंदा जैसे विश्वविद्यालय ज्ञान की प्रमुख केंद्र बने। स्त्रियों की स्थिति में इस काल में मिला-जुला असर देखा गया। एक और नारी शिक्षा और कला में उनका योगदान महत्वपूर्ण था, वही दूसरी और उनकी स्वतंत्रता और अधिकारों में कुछ हद तक कमी भी आई। समाज में विवाह और परिवार संस्था को अधिक सुदृढ़ किया गया और सती प्रथा जैसी कुरीतियों का उदय भी इसी समय हुआ।

धार्मिक दृष्टिकोण से गुप्त काल बहुधर्मी था। हिंदू धर्म का पुनरुत्थान हुआ, जिसमें विष्णु, शिव और शक्ति पूजा का विशेष महत्व था। साथ ही बौद्ध और जैन धर्म का भी प्रचलन बना रहा। मंदिर निर्माण कला और मूर्तिकला का विकास भी इस समय अपने चरम पर था, जिससे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में धार्मिक संस्थाओं का प्रभाव स्पष्ट होता है।

कुल मिलाकर गुप्तकालीन सामाजिक जीवन एक समृद्ध, संरचित और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से उन्नत था। यह काल न केवल राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि सामाजिक परिवर्तनों का भी एक प्रमुख युग था, जिसने भारतीय समाज की आधारशिला को मजबूत किया। इस शोध पत्र में उन प्रमुख सामाजिक आयामों का अध्ययन किया जाएगा जिन्होंने गुप्तकालीन समाज को दिशा दी।

A. *वर्ण व्यवस्था और जाति संरचना*

गुप्तकालीन समाज मुख्यतः वर्ण व्यवस्था पर आधारित था, जिसमें चार प्रमुख वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र समाज की नींव बने हुए थे। इस समय में वर्ण व्यवस्था और कठोर हो गई थी और जातियों के बीच विभाजन अधिक स्पष्ट हो गया था। ब्राह्मणों का समाज में विशेष दर्जा था, और उनका धार्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में वर्चस्व था। हालांकि क्षत्रिय भी शक्ति और प्रशासन में अग्रणी थे। वैश्य व्यापार और कृषि से जुड़े थे। जबकि शूद्रों का कार्य समाज की सेवा करना था।

1) *ब्राह्मण:* गुप्त काल में ब्राह्मणों का समाज में उच्च स्थान था। ब्राह्मणों का आदर किया जाता था। दंड देते समय भी राजा ब्राह्मणों के प्रति उदारता का व्यवहार करता था। स्मृति साहित्य में वर्ण- विभेद की भावना दृष्टिगोचर होती है। भयंकर अपराध करने पर भी ब्राह्मण को मृत्युदंड नहीं दिया जाता था। शुद्रक के मृच्छकटीकम के नवें अंक में ब्राह्मण चारूदत्त के हत्यारा सिद्ध हो जाने पर भी उसे प्राण दंड नहीं दिया गया था। देश कुमार चरित्र ब्राह्मण मंत्री राजद्रोह का दोषी है, किंतु उसे केवल अंधा बना दिया गया था। उन्हें अर्थ दंड ही मिलता था। देश निष्कासन का दंड भी उन्हें दिया जा सकता था। ब्राह्मणों को अन्य वर्णों की तुलना में दंड कम मिलता था। बृहस्पति के अनुसार सभी प्रकार के दिव्य सबसे कराये जा सकते थे, लेकिन ब्राह्मण से विष दिव्य नहीं कराया जाना चाहिए। साक्ष्य देने के संदर्भ में भी भेदभाव निहित था। इस प्रकार समाज में ब्राह्मणों का सर्वोच्च स्थान था। अर्थशास्त्र 1.3 में उसके कार्य संबंधी विवरण मिलता है-

©IJRASET: All Rights are Reserved

"स्वधर्मों ब्राह्मणस्या ध्ययन मध्यापन यजनं दानं प्रवि ग्रहश्चेति"

अर्थात उसके मुख्य छह कर्म थे: वेद पढ़ना, वेद पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना और दान लेना। यह कार्य उसके स्वधर्म के अंतर्गत आते थे । इसकी पुष्टि अन्य साहित्यिक स्रोतों जैसे मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति गौतम सूत्र, बोधायन धर्मसूत्र, कृत्यकल्पतरु समरांगणसूत्रधार इत्यादि से भी होती है। इसके अतिरिक्त अपनी तपश्चार्य और ज्ञान से वह समाज का मार्गदर्शन करता था। वैसे ब्राह्मणों का मुख्य कार्य धार्मिक था, परंतु वे अन्य प्रकार के पेशे भी अपनाने लगे थे। यदि ब्राह्मण अपने कुटुंब का भरण पोषण करने में असमर्थ होता है, तो वह क्षत्रिय और वैश्य कर्म अपना सकता था। आपातकाल में ब्राह्मण सैनिक वृत्ति अपना सकता था।

2) *क्षत्रिय:* मनुस्मृति के अनुसार

"स्थाश्वं हस्तिनम छत्रं धनं धान्यं पशुनिस्त्रयं। सर्वद्रव्याणि कुत्यं यजवति सत्य तत।"

अर्थात युद्ध में जीती गई सभी वस्तुएं (रथ, घोड़ा, हाथी, छत्र, धन-धान्य, पशु, स्त्रियां, द्रव्य, सोना चांदी) योद्धा अथवा क्षत्रीय का होता है। चार वर्ण वाली व्यवस्था में क्षत्रियों का दूसरा स्थान था। धर्मशास्त्रों के अनुसार क्षत्रिय का प्रमुख कर्तव्य प्रजा की रक्षा करना, दान करना, यज्ञ करना, वेद पढ़ना आदि माने गए हैं। स्मृतिकर विष्णु के क्षत्रिय का प्रमुख कर्तव्य प्रजा का पालन मन है। युद्ध उनके जीवन का मुख्य पहलू था। ह्वेनसांग ने क्षत्रियों की प्रशंसा की है। उसने लिखा है "ब्राह्मण एवं क्षत्रिय आडंबर विहीन, सरल और पवित्र जीवन यापन कर मितव्ययी होते थे। गुप्तकाल में ब्राह्मणों के समान क्षत्रिय उपजातियां में विभक्त नहीं थे। उनका एक ही वर्णन एवं एक ही कार्य प्रजा का पालन करना होता था। वह दयालु, परोपकारी व युद्ध कला में प्रवीण होते थे।

3) *वैश्य:* वैश्य वर्ण का प्रमुख व्यवसाय कृषि और व्यापार था। धर्मशास्त्रों में इनका कर्तव्य अध्ययन, यजन, दान, कृषि, पशुपालन और वाणिज्य बताया गया है। गौतमसूत्र के अनुसार वैश्यों का अध्ययन, यजन और दान परमकर्तव्य थे। कौटिल्य ने भी इसका समर्थन किया है :

नैश्यस्थस्या ध्ययनं यजनं दान (अर्थशास्त्र 3.7)

अर्थात वैश्य का प्रधान कर्म था अध्ययन करना, यज्ञ करना और दान देना।

गुप्त काल में इन्हें वणिक, श्रेष्टि और सार्थवाह भी कहा गया है। ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं जहां वैश्य वर्ण के लोगों को क्षत्रिय कर्म करते हुए दिखाया गया है। वैश्य राजकीय कार्य भी करते थे। कई स्मृतियों में यह भी कहा गया है कि ब्राह्मण और क्षत्रियों की सेवा करना भी वैश्य का कर्तव्य है। वैश्य वर्ण ने गुप्तकाल में बहुत प्रगति की। वर्ण के लोग अपनी दानशीलता के लिए भी प्रसिद्ध थे। संभवतः ये अपनी आय का बहुत सा हिस्सा सार्वजनिक हित में खर्च करते थे। फाह्यान की यात्रा विवरण में इस प्रकार के उल्लेख मिलते हैं।

4) *शूद्र:* अंतिम वर्ण शूद्रों का था। साधारणत: शूद्रों का कार्य बीजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) की सेवा करना था। याज्ञवल्क्य की स्मृति में कहा गया है कि शूद्र व्यापारी, कृषक और कारीगर भी हो सकता था। स्पष्ट है कि गुप्तकालीन शूद्र खेती व व्यवसाय करते थे। प्रशासनिक गतिविधियों में भी उनकी साझेदारी होती थी। शूद्रों की स्थिति मौर्यकाल की अपेक्षा अधिक संतोषजनक लगती है। गुप्तकाल के धर्मशास्त्रों में स्पष्ट रूप से दसों और अस्पृश्यों से शूद्रों को भिन्न बताया गया है। सैद्धांतिक तौर पर समाज चार वर्णों में विभाजित था, परंतु ऐसे बहुत से गुट थे जो इस योजना से बाहर थे। वह अंत्यज (अछूत) थे। उनको अशुद्ध माना गया, यदि उनसे कोई छू जाता तो वह भी अशुद्ध हो जाता और जिन इलाकों में उच्च वर्ण के लोग रहते थे, उन इलाकों में उनके आवागमन को मना कर दिया जाता था। चांडाल और चर्म कार्य जैसे गुटों को अपवित्र माना गया और जाति व्यवस्था से बाहर रखा गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्राह्मणिक सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत अनेक सामाजिक गुटों की हालत सदैव दरिद्र बनी रही। इस समय जाति व्यवस्था में कड़ाई से नियमों का पालन किया जाता था, और सामाजिक गतिशीलता कम हो गई थी। शादी विवाह भी जातिगत ढांचे के भीतर ही होते थे और एक वर्ण से दूसरे वर्ण में स्थानांतरण असंभव माना जाता था। वर्ण व्यवस्था में इस कठोरता का प्रभाव दीर्घकालीन था, जो भारतीय समाज में सदियों तक बना रहा।

B. *स्त्रियों की स्थिति*

गुप्तकालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति एक महत्वपूर्ण विषय है। इस युग में महिलाओं की शिक्षा और कला में भूमिका को महत्व दिया गया, विशेष कर उच्च वर्ग की महिलाओं को। लेकिन कुल मिलाकर स्त्रियों की स्थिति में गिरावट ही देखी गई। उन्हें गृह कार्य और परिवार के भीतर सीमित कर दिया गया था, और उनके अधिकारों में कमी आई। उच्च वर्गों की महिला की हालत भी निम्न थी। इस काल में भी वाकाटक रानी प्रभाववती गुप्त जैसी महिलाओं के पास काफी शक्ति थी, परंतु सभी महिलाओं को यह विशेष अधिकार प्राप्त नहीं थे।

गुप्तकालीन स्त्रियां यदपि स्वतंत्र जीवन जीती थीं, फिर भी उनकी गतिविधियां सीमित थी। स्त्रियां बंधनमय थी, स्त्रियां बिना पर्दा किए घूम फिर सकती थी, परंतु अजनबी व्यक्तियों से अनर्थक वार्तालाप करने का उन्हें अधिकार प्राप्त नहीं था।

न पर पुरुषमनिमाषित अन्यत्र वणी व्रजित वैधैम्य।
(अपरार्क की टीका, याज्ञवल्क्य स्मृति)

विधवाओं पर कुछ सामाजिक बंधन थे, ऐसी स्त्रियां अकेले बाहर नहीं निकलती थी।

क्रीडा शरीर संस्कारं, समाजोत्सवदर्शन, हास्यं पर गृहे यानं त्यजेत्प्रोयिशतभर्तमं।
याज्ञवल्क्य 1.84

गुप्त काल में भी अभिसारीकाओं अथवा नर्तकी स्त्रियों का अस्तित्व था या उनका उपयोग जन्म आदि अवसरों, मंदिर में नाचने-गाने के लिए होता था। महाकवि कालिदास ने उज्जयिनी के महाकाल के मंदिर में चबरधरिणि नृर्तकियों के नृत्य का स्पष्ट वर्णन किया है।

इस समय सती प्रथा जैसी कुरीतियों का उदय हुआ, जो यह दर्शाता है कि स्त्रियों की स्वतंत्रता और सामाजिक स्थिति में कुछ हद तक गिरावट आई थी। गुप्तकालीन साहित्य, स्मृतियां और काव्यादि में समाज में पति के साथ सती होने का उल्लेख मिलता है। कालिदास ने इस प्रथा का संकेत पति वत्मना पद के द्वारा किया है। सती प्रथा के संबंध में भी गुप्तकालीन अभिलेखीय प्रमाण मिले हैं। सती प्रथा का प्रथम महत्वपूर्ण साक्षी 510 ई का ऐरण शिलालेख है, जिसमें गोपराज नामक सेनापति की पत्नी के सती होने का वर्णन है। विवाह में स्त्रियों की भूमिका प्रमुख परंपराओं और रीति रिवाज के अनुसार निर्धारित की गई थी, और उनका जीवन मुख्यतः परिवार और समाज के नियमों के अनुसार बंधा हुआ था।

C. शिक्षा और ज्ञान

गुप्त काल में शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई। तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई, जहां विभिन्न विषयों में शिक्षा दी जाती थी। ब्राह्मण वर्ग के लोग विशेष रूप से शास्त्रों और धार्मिक ग्रंथो के अध्ययन में लगे रहते थे, जबकि अन्य वर्ग भी व्यापार और विज्ञान के अध्ययन में रुचि रखते थे। इस समय में खगोलशास्त्र, गणित और चिकित्सा जैसे विषयों में प्रगति हुई, जिनमें आर्यभट्ट और वराहमिहिर जैसे विद्वानों का योगदान सराहनीय है।

D. धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन

गुप्त काल में धार्मिक जीवन भी अत्यधिक महत्वपूर्ण था। इस काल में हिंदू धर्म का पुनरुत्थान हुआ विशेषकर विष्णु और शिव की पूजा व्यापक रूप से प्रचलित हो गई। मंदिर निर्माण कला में भी इस समय उल्लेखनीय प्रगति हुई, और गुप्त शासको ने बड़े-बड़े मंदिरों का निर्माण कराया। इस काल में मूर्ति कला और चित्रकला के माध्यम से धार्मिक प्रतीकों का प्रचार प्रसार हुआ।

बौद्ध और जैन धर्म भी इस समय में प्रचलित रहे लेकिन उनके लोकप्रियता में कुछ कमी आई। धार्मिक सहिष्णुता इस समय की एक विशेषता थी, और विभिन्न धर्मो के लोग आपस में मिलजुल कर रहते थे। इस प्रकार गुप्त काल में धार्मिक विविधता को संरक्षण मिला जिसे समाज में सहिष्णुता और एकता को बढ़ावा दिया।

E. कला, साहित्य और स्थापत्य:

गुप्तकालीन समाज में कला, साहित्य और स्थापत्य का विशेष विकास हुआ। साहित्य के क्षेत्र में संस्कृत भाषा का उत्थान हुआ और कालिदास जैसे महाकवियों ने अपने अद्वितीय साहित्यिक योगदान से इस युग को गौरवान्वित किया। मेघदूत, अभिज्ञानशाकुंतलम जैसी कालिदास की रचनाएं आज भी भारतीय साहित्य में मील का पत्थर मानी जाती है। इसके अलावा इस समय में वास्तुकला विशेष कर मंदिर निर्माण और मूर्ति कला में भी उत्कृष्टता प्राप्त की गई।

II. निष्कर्ष

गुप्तकालीन सामाज एक संगठित और संरक्षित समाज था जिसमें धर्म, शिक्षा, कला और संस्कृति का समन्वय देखा जा सकता है। इस युग में सामाजिक आयामों में महत्वपूर्ण बदलाव आए, जिन्होंने भारतीय समाज को एक नई दिशा दी। वर्ण व्यवस्था, स्त्रियों की स्थिति, शिक्षा और धार्मिक जीवन ने गुप्तकालीन समाज को मजबूत और समृद्ध बनाया, हालांकि सामाजिक असमानताओं और स्त्रियों की स्थिति में गिरावट जैसे मुद्दे भी इस काल की चुनौतियों में शामिल थे। गुप्तकालीन समाज के सामाजिक आयाम का यह अध्ययन इस बात को रेखांकित करता है कि यह युग भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण चरण था, जिसका प्रभाव आज भी भारतीय समाज की संरचना में देखा जा सकता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] शर्मा, रामशरण प्राचीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2009
[2] थापर रोमिला, अर्ली इंडिया फ्रॉम द ओरिजिन तो एडी 1300. यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, 2002.

[3] मजीदंर, अशोक कुमार. गुप्तकालीन भारत का इतिहास. कोलकाता पुस्तक भवन 1998।
[4] सिंह, उपेंद्र. भारत का सांस्कृतिक इतिहास. पेंगुइन, रेंडम हाउस इंडिया 2010।
[5] मिश्रा, जयशंकर. प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास
[6] सहाय, शिवस्वरूप. प्राचीन भारत का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास।

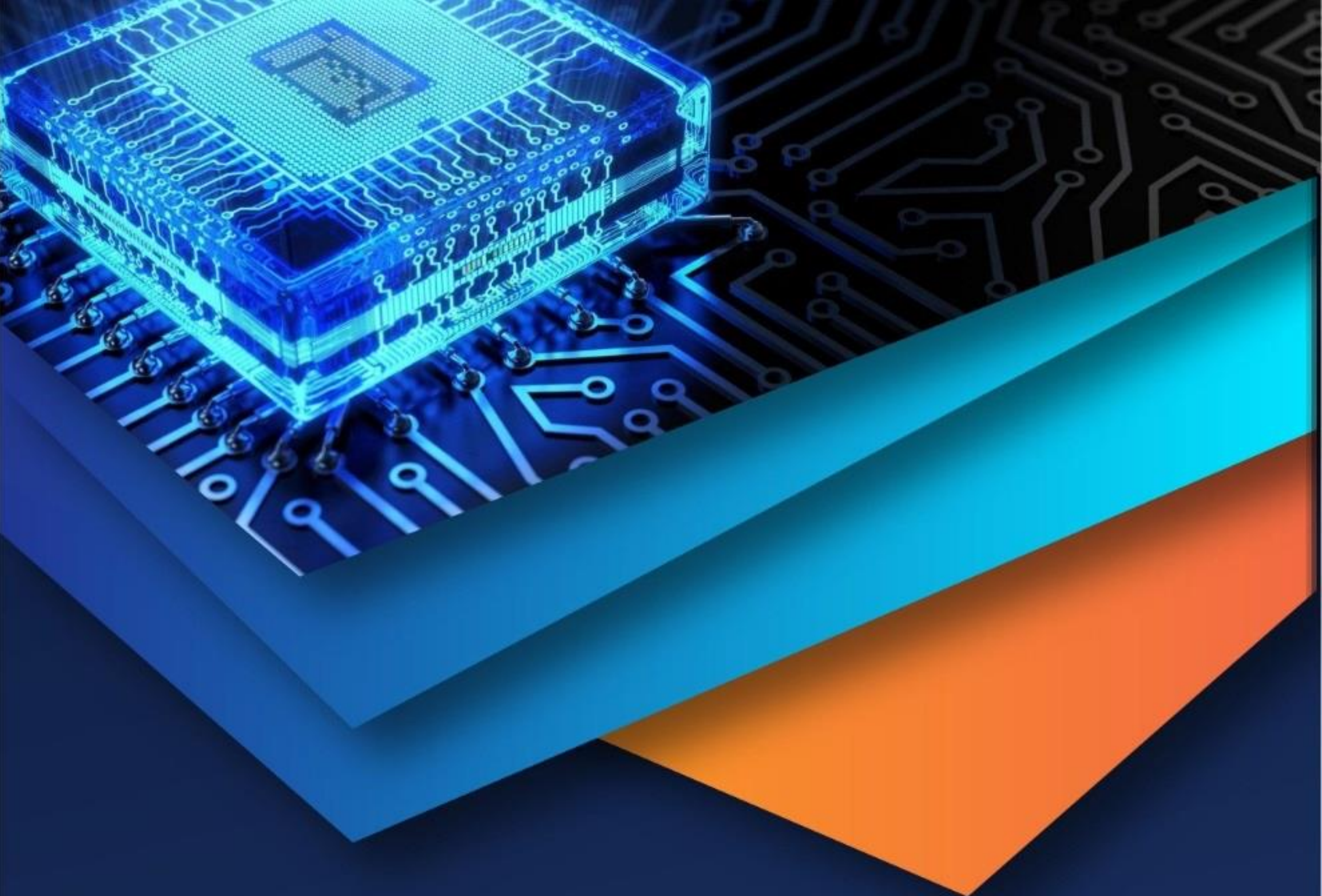

10.22214/IJRASET

45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)